(1)

Online Class.
Date- /202
Day
Time- 10:40 10:50 AM

Lecture Series No.- 44.

Topic,

(1) Monadology.

Dr. Sunita Kumari
Department of Philosophy.
B.A. Part - I
Paper - II (H.)
A.N.D. College Shahpur, Patory, Samastipur

Ans. Leibnitz के Monads या चित् - बिन्दु की तुलना Spinoza के द्रव्य से की गई है। प्रत्येक बिन्दु शाश्वत और अपने में पूर्ण है, क्योंकि प्रत्येक में सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड निहित है और इसमें भूत वर्तमान तथा भविष्य की सभी घटनाएँ अन्तर्गत है। इसलिए यह ऐसा अणु है, जिसमें विराट विश्व है। चूंकि इसमें आदि अन्त सभी है। इसलिए इसे हम भूत और भविष्य कुछ भी कह सकते हैं।

P.T.O.

अर्थात् इसमें बीती हुई सभी दशाएँ सम सरक्षित है और भविष्य में होनेवाली सभी सम्भावनाएँ बीज-रूप में विद्यमान है। प्रत्येक Monads अपने आप में स्वावलम्बी तथा स्वतन्त्र सत्ता है।

इसलिए किसी Monads को दूसरे की आवश्यकता नहीं होती है न एक दूसरे पर निर्भर होता है और न उनमें किसी प्रकार का आदान-प्रदान सम्भव है। Monads पूर्णतः गवाक्षहीन (Windowless) है।

प्रश्न उठता है कि यदि Monads गवाक्षहीन है तो उनके बीच परस्पर सम्बन्ध को हम कैसे व्यक्त कर सकते हैं क्योंकि वास्तविक चीजों में पारस्परिक आदान प्रदान देखने में आता है, जिसे Monadalogy को स्पष्ट करना चाहिए। Leibnitz के अनुसार

P.T.O.

Lalkenbeg के अनुसार Monads के परस्पर सम्बन्धों की दैवी परिकल्पना के बिना भी समझाया जा सकता है क्योंकि Leibnitz के दर्शन में पूर्व स्थापित सामंजस्य का नियम वस्तु: प्राकृतिक नियम ही है। अरस्तु जब Leibnitz के Monads की प्रकृति पूर्व स्थापित सामंजस्य द्वारा निर्धारित की गई तो उसमें तात्पर्य यही समझना चाहिए कि वह प्राकृतिक नियमों द्वारा निर्धारित हैं। ये प्राकृतिक नियम Monads की प्रत्यक्षीकरण और प्रयास की प्रक्रिया में काम करते हैं। पूर्व स्थापित सामंजस्य के नियम के अनुसार जगत के चित्र etc.।

END